ISSN: 2582-7162
Original Article

''महाविद्यालयी शिक्षको में अंधविश्वास की भावना का अध्ययन''
(विभिन्न संकायों के संदर्भ में)

डा.वीरेन्द्र सिंह यादव

प्राचार्य (R.P.S College of Education,Khor-Ateli)
सुनेहरी बाई (Ph.D Research Scholar Maharaj Vinayak Global University, Jaipur)

Corresponding Author:
डा. वीरेन्द्र सिंह यादव
प्राचार्य (R.P.S College of Education,Khor-Ateli)
सुनेहरी बाई (Ph.D Research Scholar Maharaj Vinayak Global University, Jaipur)
Email: dr.vsy10@gmail.com
Received 2022 August 26, Accepted 07 October Published 2022 October 31

सारांश
प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य महाविद्यालयी शिक्षको में अंधविश्वास की भावना का अध्ययन करना है। इस शोध में शोधकर्ता ने क्षेत्र विशेष के शिक्षको का चयन कर संकायो के आधार पर उनमें अंधविश्वास की भावना का अवलोकन करना है। जिसमें शोधकर्ता को कला,विज्ञान,एवं संकायो के शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना में अन्तर पाया गया।

प्रस्तावना
अन्धविश्वास से हमारा तात्पर्य विचारों व मनोवृत्तिया के संयुक्त रुप से है। जिसके आधार पर हम किसी वस्तु, व्यक्ति, राष्ट्र आदि के बारे में एक ऐसी दृढ व स्थाई प्रतिमा बना लेते है। जो गलत तथ्यों तथा अतार्किक चिंतन पर आधारित होता है।

जब आज हमारा समाज विज्ञान के इस युग में निरन्तर बढ़ रहा है व विश्व के मानस पटल पर दिव्यपुंज की तरह उभरकर सामने आ रहा है उसी प्रकार कुछ मानसिक भ्रान्तियाँ व रूढ़िवादिता व कुरुतियाँ भी खुल कर सामने आ रही है। आज का युवा वर्ग जहाँ आविष्कारों की दुनिया में जी रहा है वही उनके मन में कुछ ऐसी संभावनाएँ व कुंठाएँ अपनी जगह बनाकर बैठी है। उनमें से अंध–विश्वास भी ऐसी भ्रांति है, जो विद्यार्थी वर्ग में कही अपना स्थान बनाकर बैठी है। बहुत से ऐसे अंध–विश्वास है जो युवा वर्ग को अपनी गिरफ्त में लिए हुये है। तथा वें अंध–विश्वास उनको आगे बढ़ने से रोकते है। जैसे– स्कूल जाते समय यदि कोई छींक दें, बिल्ली रास्ता काट जायें, रास्ते में खाली मटका लिये हुये कोई महिला मिल जायें तो वह उस रास्ते से नही गुजरते है।

प्रायः विद्यार्थी यह भी मानते है कि इस दिन कार्य करने से सम्पन्न हो जायेगा। कुछ मानते है कि यह रंग उनके लिए शुभ होगा अर्थात् वह अपने कर्म इन मान्यताओं पर आधारित कर देते है। जो उनको अपने सामर्थ्य से विचलित करती है। ग्रामीण ही नही बल्कि शहरी क्षेत्र में भी अंध–विश्वास ने व्यक्तियों के मन में अपनी जगह बना रखी है।

अंधविश्वास का जहर समाज में इस कदर फैला हुआ है, जैसे कि आदमी का विवेक एकदम लुप्त हो गया हो। योंतो अंधविश्वासों की लम्बी कड़ी है अनेक रुढियाँ चलनउ में है जैसे सांप की केंचुली से बच्चों में विद्या आती है। कैंचुली आंखो पर मलने से आंखे नहीं दुखती आदि।'' दर असल अंधविश्वास से हम इस प्रकार जकड़े हुए है कि हम सोचने की कोशिश भी नहीं करते कि क्या ऐसे अंधविश्वासों के पीछे कोई वैज्ञानिक या मनोवैज्ञानिक कारण भी है।

प्रायः ऐसा माना जाता है कि विज्ञान वर्ग से संबंध रखने वाले अंध–विश्वास को नही मानते लेकिन वह भी कुछ सीमा तक अंध–विश्वास में विश्वास करते है। अतः अंध–विश्वास व्यक्तियों को अंदर से कमजोर बनाता है। अंध–विश्वास ऐसी बिमारी है जो व्यक्तियों को नही होने वाली घटनाओं के होने का आभास उनके मन–मस्तिष्क में अंकित कर देती है।

अंध–विश्वास व्यक्ति की उन्नति में बाधक तत्त्व है। आजकल अंध–विश्वास के प्रति लोगों को इतना जाग्रत किया जा रहा है। विज्ञान के माध्यम से अंध–विश्वास को दूर किया जा रहा है फिर भी लोगो को अंध–विश्वास से मुक्त नही किया जा सका है। यदि हमें हमारें देश का भविष्य जो विद्यालयों में बन रहा है जहाँ आने वाली पीढी तैयार हो रही है उनको ऐसी मानसिक विडम्बना से मुक्ति दिलानी है तो उनमें अंध–विश्वास की जगह आत्म विश्वास जगाना होगा।

विद्यालयों में कला व विज्ञान के विद्यार्थी है। दोनो वर्ग के विद्यार्थियों में अंध–विश्वास देखने को मिलता है।

शिक्षकों में भी अंधविश्वास की भावना पायी जाती है जो कि उनकी उन्नति तथा देश की भावी पीढ़ियों के मार्ग में भी बाधक सिद्ध होती है। ऐसे में अन्धविश्वास रहित नयी पीढी का निर्माण हो सके।

इसलिए शोधार्थी ने शोधकार्य के द्वारा विभिन्न संकाय के संदर्भ में महाविद्यालयी शिक्षको में अंधविश्वास की भावना का अध्ययन करने का प्रयास है

क्योंकि दैनिक जीवन में अन्धविश्वास के कारण अनेक घटनाये देखने को मिलती है।

समस्या कथन

''महाविद्यालयी शिक्षको में अंधविश्वास की भावना का अध्ययन''

(विभिन्न संकायों के संदर्भ में)

शोध के उद्देश्य

1. विभिन्न संकाय के आधार पर शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना का स्तर ज्ञात करना।
2. विज्ञान संकाय एवं कला संकाय के शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. विज्ञान संकाय एवं वाणिज्य संकाय के शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. कला संकाय एवं वाणिज्य संकाय के शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. लिंग भेद के आधार पर शिक्षकों में अन्धविश्वास की भावना का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

1. विज्ञान संकाय एवं कला संकाय के शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. विज्ञान संकाय एवं वाणिज्य संकाय के शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. कला संकाय एवं वाणिज्य संकाय के शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. लिंग भेद के आधार पर शिक्षकों में अन्धविश्वास की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषिकरण

i. **अंध विश्वास** :– प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता का अंधविश्वास से अभिप्राय विवेकहीन विश्वास से है।

ii. **महाविद्यालय शिक्षक** – महाविद्यालयों में पढाने वाले महिला एवं पुरुष वर्ग से है

शोध की परिसीमाएं

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा शोधकार्य केवल राजस्थान राज्य के संदर्भ में ही किया गया है जो कि अलवर जिले तक ही सीमित है प्रस्तावित शोध कार्य में महाविद्यालयी महिला एवं पुरुष वर्ग के शिक्षकों को ही लिया गया है।

शोध में प्रयुक्त अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोधकार्य सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है

प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्रयुक्त न्यादर्श

प्रस्तुत शोधकार्य में राजस्थान राज्य के अलवर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से यादृच्छिक विधि द्वारा महाविद्यालयी शिक्षको का चयन किया गया है। कुल न्यादर्श की संख्या 120 है जो निम्न प्रकार है:–

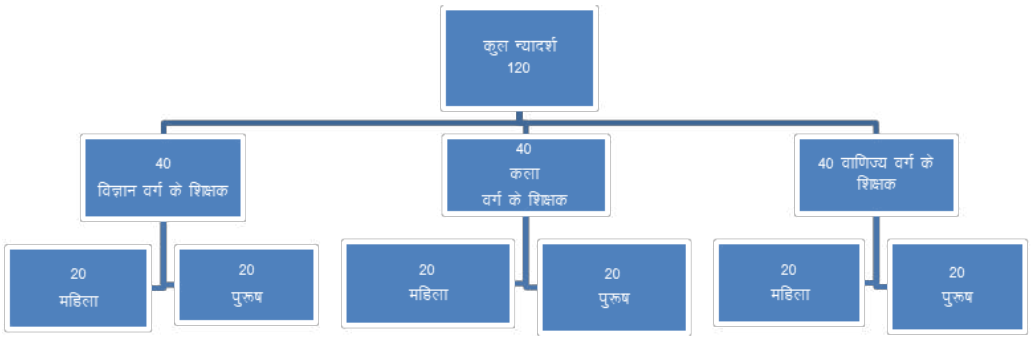

प्रस्तुत शोधकार्य मे अध्ययन के सम्पादन करने हेतुं एल.एन.दुबे एवं बी.एम. दीक्षित द्वारा "अंधविश्वास मापनी" निर्मित का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

1. मध्यमान (Mean)
2. मानक विचलन
3. टी अनुपात

आंकडों का वर्गीकरण विश्लेशण एवं व्याख्याँ

परिकल्पना–1 विज्ञान संकाय एवं कला संकाय के शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना में सार्थक अंतर नही पाया जाता है।

सारणी स. 1

क्र.सं.	समूह	N=80	M	S.D	't'
1.	विज्ञान के शिक्षक	40	44.4	17.53	16.99
2.	कला वर्ग के शिक्षक	40	96.15	7.98	

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/3.5.2022-488-492

df = 78

0.05 सार्थकता स्तर पर t का मान = 1.99

0.01 सार्थकता स्तर पर t का मान = 2.64

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त t का मान 16.99 है जो कि सारणी के 0.05/0.01 स्तर के मान 1.99/2.64 से अधिक है अतः स्पष्ट है कि कला एवं विज्ञान के शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना के आधार पर सार्थक अंतर पाया जाता है। इस आधार पर यह परिकल्पना पूर्णरुप से अस्वीकृत की जाती है।

उपर्युक्त परिकल्पना के सत्यापन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि संकाय भेद के आधार पर महाविद्यालयी शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना भिन्न –भिन्न होती है।

कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना संबंधी आंकडों को प्रदर्शित करने वाला आरेख

आरेख संख्या 1

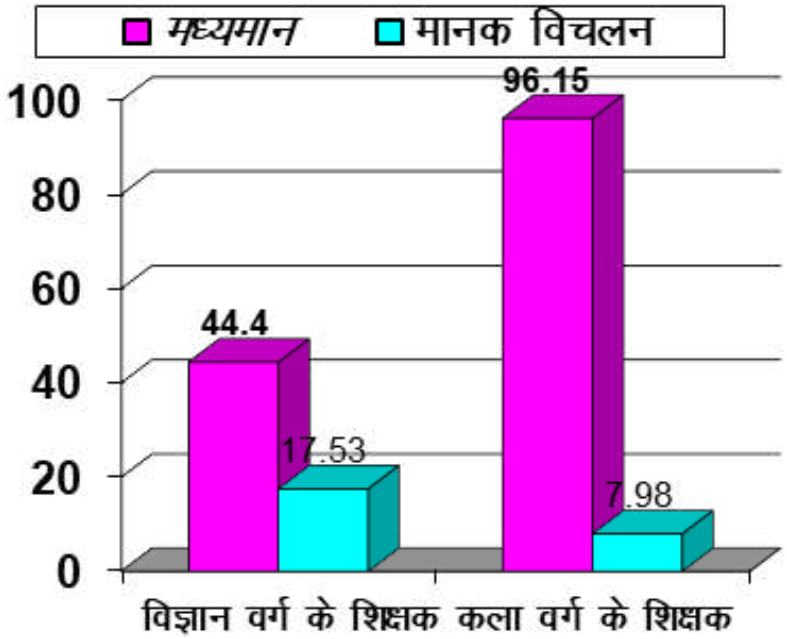

परिकल्पना – 2 विज्ञान संकाय एवं वाणिज्य संकाय के शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना में सार्थक अंतर नही पाया जाता है।

सारणी सं. 2

क्र.सं.	समूह	N=80	M	S.D	't'
1.	विज्ञान के शिक्षक	40	44.4	17.53	6.19
2.	वाणिज्य वर्ग के शिक्षक	40	69.22	18.36	

df = 78

0.05 सार्थकता स्तर पर t का मान = 1.99

0.01 सार्थकता स्तर पर t का मान = 2.64

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त t का मान 8.15 है जो कि सारणी के 0.05/0.01 स्तर के मान 1.99/2.64 से अधिक है अतः स्पष्ट है कि कला एवं वाणिज्य संकाय के शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना के आधार पर सार्थक अंतर पाया जाता है। इस आधार पर यह परिकल्पना पूर्णरुप से अस्वीकृत की जाती है।

उपर्युक्त परिकल्पना के सत्यापन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि संकाय भेद के आधार पर महाविद्यालयी शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना भिन्न –भिन्न होती है।

कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना संबंधी आंकडों को प्रदर्शित करने वाला आरेख

आरेख संख्या 3

परिकल्पना – 4 लिंग भेद के आधार पर शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना में सार्थक अंतर नही पाया जाता है।

आरेख संख्या 2

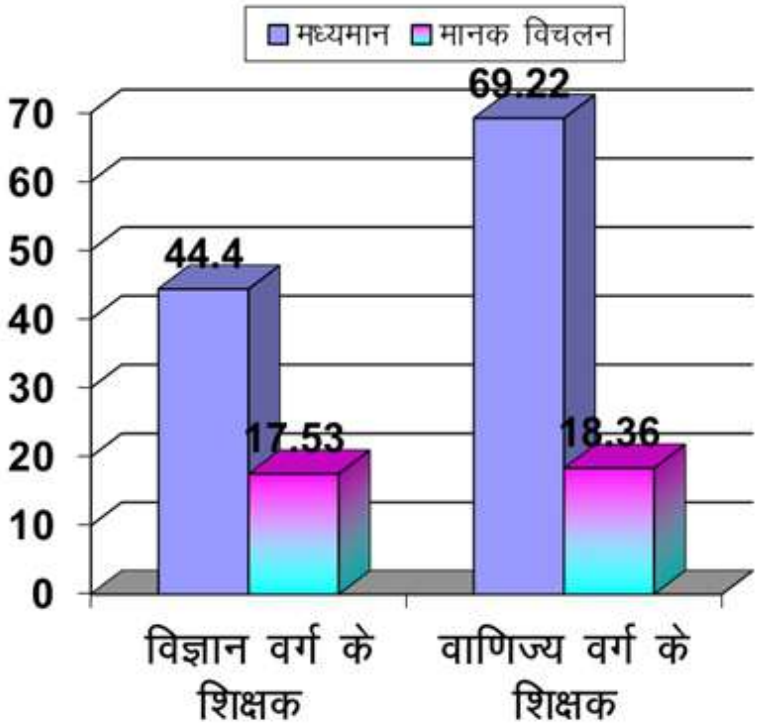

परिकल्पना – 3 कला संकाय एवं वाणिज्य संकाय के शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना में सार्थक अंतर नही पाया जाता है।

सारणी सं. 3

क्र.सं.	समूह	N=80	M	S.D	't'
1.	कला वर्ग के शिक्षक	40	96.15	7.98	8.15
2.	वाणिज्य वर्ग के शिक्षक	40	69.22	18.36	

df = 78

0.05 सार्थकता स्तर पर t का मान = 1.99

0.01 सार्थकता स्तर पर t का मान = 2.64

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त t का मान 8.15 है जो कि सारणी के 0.05/0.01 स्तर के मान 1.99/2.64 से अधिक है अतः स्पष्ट है कि कला एवं वाणिज्य संकाय के शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना के आधार पर सार्थक अंतर पाया जाता है। इस आधार पर यह परिकल्पना पूर्णरुप से अस्वीकृत की जाती है।

उपर्युक्त परिकल्पना के सत्यापन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि संकाय भेद के आधार पर महाविद्यालयी शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना भिन्न –भिन्न होती है।

कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना संबंधी आंकडों को प्रदर्शित करने वाला आरेख

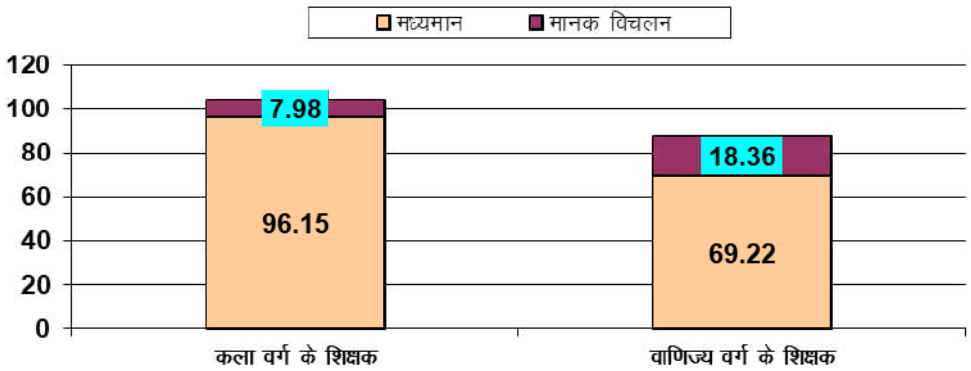

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/3.5.2022-488-492

परिकल्पना – 4 लिंग भेद के आधार पर शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना में सार्थक अंतर नही पाया जाता है।

सारणी सं. 4

क्र.सं.	समूह	N=120	M	S.D	't'
1.	महिला शिक्षक	60	74.84	20.2	2.01
2.	पुरुष शिक्षक	60	66.03	27.03	

df = 118

0.05 सार्थकता स्तर पर t का मान = 1.98

0.01 सार्थकता स्तर पर t का मान = 2.62

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त t का मान 2.01 है जो कि सारणी के 0.05 स्तर के मान 1.98 से अधिक है अतः स्पष्ट है कि लिंग भेद के आधार पर महाविद्यालयी शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना के आधार पर सार्थक अंतर आंशिक रुप से पाया जाता है। इस आधार पर यह परिकल्पना आंशिक रुप से अस्वीकृत की जाती है।

उपर्युक्त परिकल्पना के सत्यापन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि लिंग भेद के आधार पर महाविद्यालयी शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना भिन्न –भिन्न होती है

कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना संबंधी आंकडों को प्रदर्शित करने वाला आरेख

आरेख संख्या 4.4

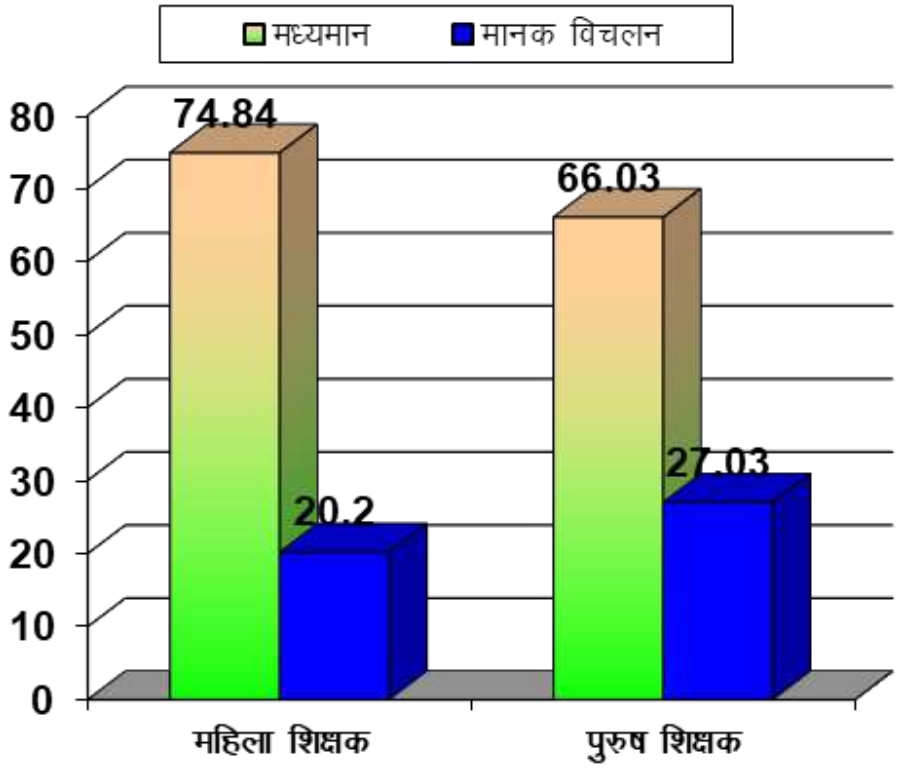

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. वीरेन्द्र बरियार ज्योति सरिता 2006'' अंधविश्वासों का हवाई जहाज '' सरिता मार्च द्वितीय
2. सोनिया जार्ज और कृष्ण प्रसाद श्रीधर 2006'' भूमण्डलीकरण और अंधविश्वास की व्याप्तता।
3. श्री राम शर्मा आचार्य '' मिथ्या मान्यताओं भांत धारणाओं से क्या लाभ '' अंधविश्वास को उखाड़ फेकिये।
4. उर्सुल उवेर 1989'' क्या नोकरी से आप उभ चुके है ? सर्वोतम पृ.स'51
5. खुरशीद आलम '' अंधविश्वास का मारा सभ्य समाज'' सरस सलील
6. सुनीत गोस्वामी 2009'' बृहस्पतिवार व्रत कथा अंधविश्वास को बढावा '' सरिता दिल्ली प्रेस भवन
7. स्वरुप संपत 2008'' अंधविश्वासों के बादल'' आहा जिन्दगी पृ.सं.52
8. गुप्ता विनोद 2008 '' अंधविश्वास कैसे कैसे'' सरिता पृ.स.131
9. सिंह, रामगोपाल1994 ''सामाजिक न्याय एवं दलित संघर्ष,'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी–